

## चौहान वंश

शाकम्भरी के चौहान

⇒ सांभर झील के आस-पास का क्षेत्र

शाखाएँ

अजमेर के चौहान

रूपम्भौर के चौहान

जालौर के चौहान

## ⇒ चौहानों की उत्पत्ति

आग्नेकुण्ड सिद्धान्त

⇒ दिया था ⇒ चन्द्रवरदाई ने अपनी गध पृथ्वीराज रासो में

⇒ उल्लेख मिला ⇒ त्रहसि वारीष्ट ने माधू पर्वत पर चला दिया और इसके आग्नेकुण्ड से

5 जातिपा

निकाली थी।

→ प्रतिहार

→ परमार

→ चालुक्य

→ चौहान ⇒ सबसे अन्त में

⇒ बिजौलिया शिलालेख के अनुसार चौहान

वत्सगौत्रिय वंशज थे

## ⇒ शाकम्भरी के चौहान

संस्थापक

वासुदेव चौहान

⇒ संस्थापना की थी ⇒ 551 ई. में

⇒ स्थापना स्थान ⇒ सपाहलस / शाकम्भरी

सांभर के आस-पास का क्षेत्र

→ राजधानी ⇒ **आहिलपुर** ⇒ वर्तमान में नाम = नागौर

→ उपनाम ⇒ चौहान का मूलपुराण  
चौहानी का आहिलपुराण

→ निर्माण ⇒ सांभर झील (जयपुर)  
शाकुम्भरी माता (सांभर)

### चन्द्रराज

→ रानी ⇒ **रुद्राणी** ⇒ यह प्रतिदिन युद्धरू झील पर 1000 दिपड जलाती थी।  
यह पौर्णिमा तिथि में निपुण थी।

### विमलराज - I

### पृथ्वीराज - I

→ सामन्त ⇒ **हड़ मीहल** ⇒ जीण माता का मंदिर बनवाया।  
मंदिर ⇒ रैवासा (सीकर)  
रुदा गया ⇒ सीकर के चौहानी की कुलदेवी

### अजमेर के चौहान

→ संस्थापक ⇒ **अजयराज / अजयपाल चौहान**

→ नगर बसाया ⇒ अजमेरनगर 1113 ई. में

→ राजधानी ⇒ अजमेर की 1113 ई.

→ इसका काल चौहान वंश का निर्माण काल

→ रानी ⇒ **सीमलदेवा / सीमलवती**

→ इसके सिक्के चलाए - रानी सीमलदेवा or स्वयं के अजयदेव नाम से चलाए।



note ⇒ राजा का पहला राजा अजयदेव जिसने अपनी रानी और खुद के नाम से सिक्के चलाए थे।

निर्माण करवाया ⇒ अजयमेरु दुर्ग (अजमेर)  
⇒ गडबोली दुर्ग  
⇒ राजा का हarem  
⇒ राजपूताना की कुर्ची/पाषाण  
⇒ मरावली का भरमान  
⇒ राजा का जिहालर

note ⇒ इस दुर्ग पर राजा में सर्वाधिक सुंदरी आक्रमण हुए। जबकि सर्वाधिक विदेशी आक्रमण अजमेर दुर्ग पर हुए।

note ⇒ इस अजमेर दुर्ग का आन्तरिक भाग का निर्माण कुवर पृथ्वीराज/पृथ्वीराज सिसोदिया ने अपनी रानी तारा के लिए निर्माण करवाया और उसी के नाम पर नया नाम तारागढ़ दुर्ग रख दिया।

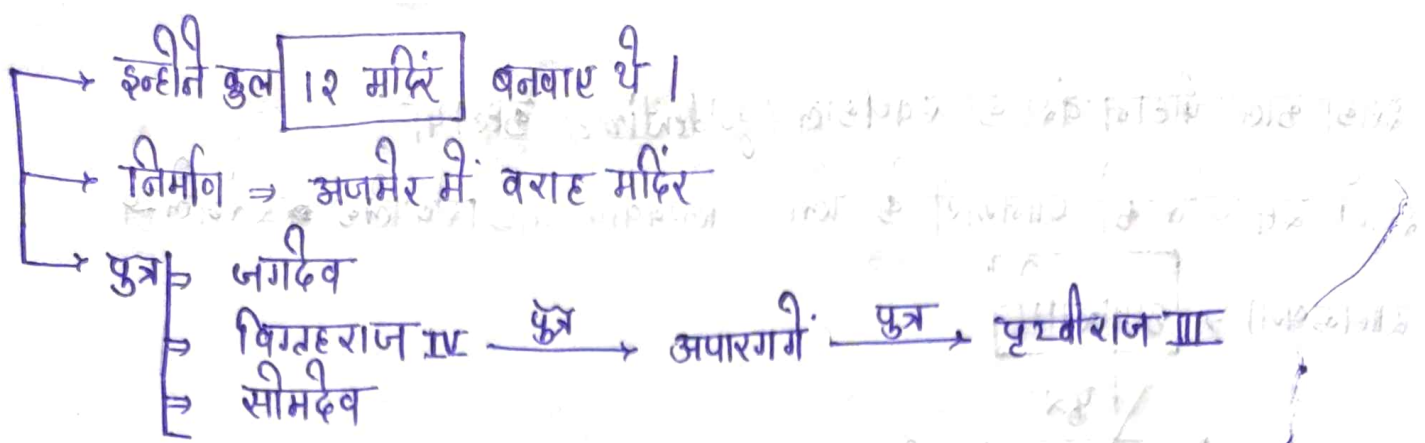
⇒ **अर्जुनराज / आनाजी**

→ इसके काल की समस्या ⇒ अजमेर में तुर्की जाति की लूट-पाट  
→ इसने अजमेर में तुर्की का नरसंहार किया था इनके खून से सती धरती की शुद्ध करने के लिए बनवाई शील

⇒ **आनासागर शील** (अजमेर) 1137

→ निर्माण ⇒ चन्द्रा + बाड़ी नदी का जल रोककर  
→ इसके किनारे बनवाए  
→ सुभाष उद्यान/ दौलत बाग  
→ बारहदरी जहागीर  
↓  
आहमद ने बनवाया था।

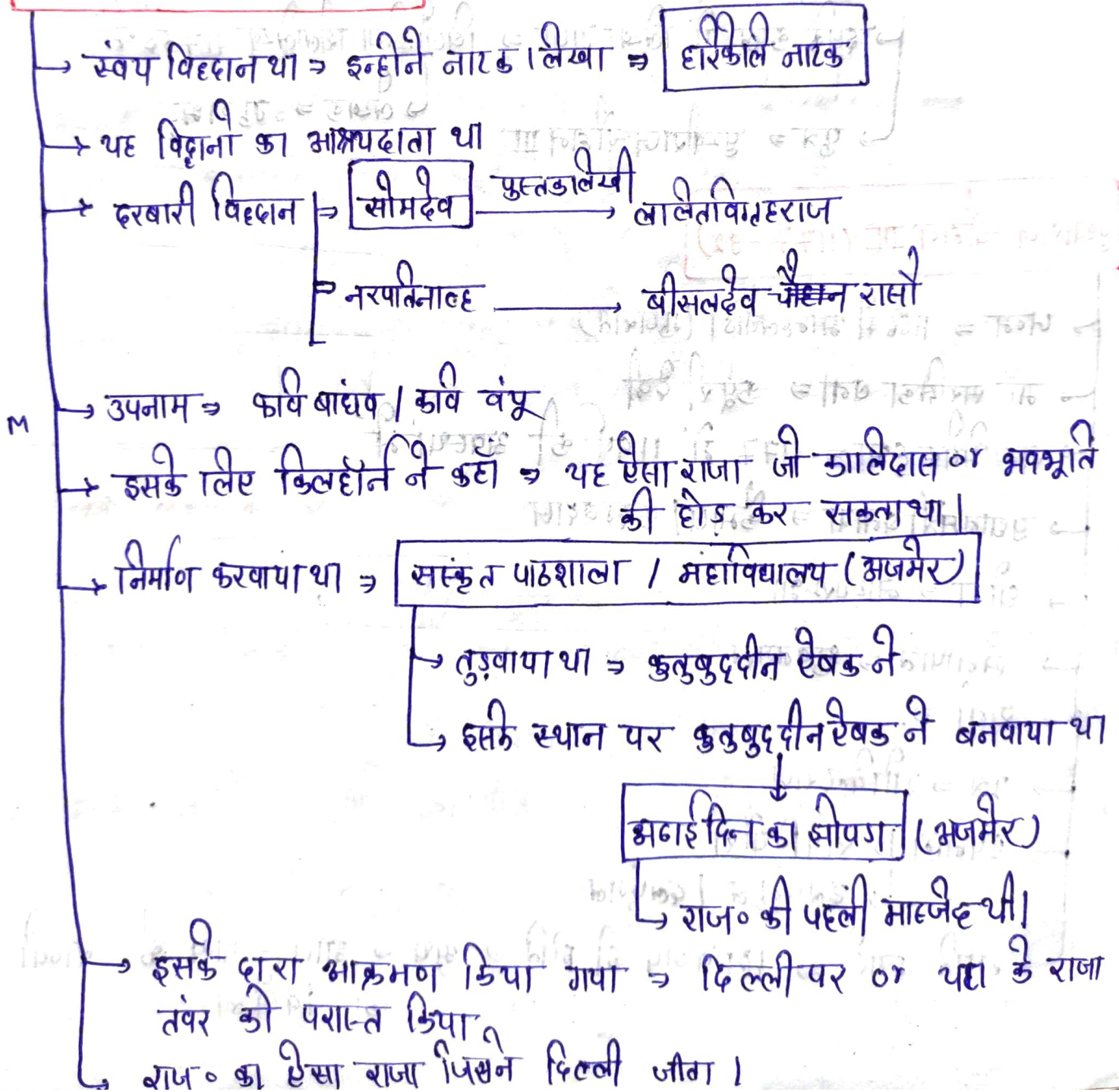
note ⇒ हसमत बेगम ने सुभाष उद्यान में विश्व में पहली बार गुलाब से इत्र बनाने की विधि चलाई थी।



note ⇒ जगदेव ने अपने पिता मर्गराज की हत्या कर दी।

note ⇒ जगदेव की जैहान का पहला पितृहन्ता कहा जाता है।

### बीसलदेव जैहान / विग्रहराज IV





- इसका काल चौहान वंश का स्वर्णकाल (golden time) कहलाया।
- इसने इस जीत की जानकारी के लिए लिखवाया था = शिवालिक के स्तंभलेख
- शासक बना = **अपारगनी**

पुत्र  
**पृथ्वीराज III** → निरुत्तान मरा गया।

सच्चा दादा  
**सीमेश्वर चौहान**

- रानी = कुँवरी देवी
- इसके काल में लिखा गया = विजयलिपि शिलालेख 1170 ई. में
- पुत्र = पृथ्वीराज चौहान III
- लेखक = गुणभट्ट

**पृथ्वीराज चौहान III (1177-92)**

- जन्म = 1166 में भान्सेलवाडा (गुजरात)
- माँ सरसिडा बनी = कुँवरी देवी
- राज्यभिषेक हुआ = 1177 में 11 वर्ष की अवस्था में
- प्रधानमंत्री बनाया = कैमास / कदम्बदास
- घोडा = नाथराभा
- सेनापति = भुवनेश्वर
- रानी =
- पुत्र = गीर्विन्दराज
- उपनाम = रापपिथौरा
- नीति चलाई = दिग्विजय की नीति = अर्थ = भास - पास की राज्या का विजय

→ इसका विरोधी ⇒ चचेरा भाई ⇒ नागार्जुन

1118 - गुडगाव का युद्ध

पृथ्वीराज  
↓  
जीत

नागार्जुन  
↓  
हार

→ समकालीन राजा ⇒ कन्नौज का जयचंद गहड़वाल

→ महीषा का ⇒ परमर्षिदेव

→ पंजाब में ⇒ भण्डानक

→ गुजरात ⇒ श्रीमण्ड

⇒ पृथ्वीराज ने 1182 में भण्डानक जाति का दमन किया था।

⇒ युद्ध हुआ ⇒ 1182 में महीषा का युद्ध (V.P)

पृथ्वीराज  
↓  
जीत

परमर्षिदेव ⇒ सेनापति ⇒ माल्हा  
↓  
हार

**पृथ्वीराज-चौहान (1177-92)**

→ दरबारी विद्वान् ⇒ चन्दरवरदाई पुस्तक लिखी पृथ्वीराज रासी लेखन जल्द होने में था  
→ जयानक भट्ट पुस्तक लिखी पृथ्वीराज विजय पृथ्वीराज चौहान का पुत्र था।  
→ इससे काल में भारत आने वाला आक्रमणकारी ⇒ मौहम्मद गौरी

1191 - तराइन का I युद्ध

पृथ्वीराज  
↓  
जीत

मौहम्मद गौरी ⇒ हार

पह गजनी (अफगानिस्तान) से आया था।



note इस युद्ध में गौरी की धायल ठिया पृथ्वीराज चौहान का सेनापति गीविन्दराज ने

### 1192 - तैराइन का II युद्ध

पृथ्वीराज  
↳ खार

गौरी  $\xrightarrow{\text{साथ दिया}}$  कुन्नीज ब्राह्मण जयचन्द गहलवाल ने  
↳ जीत

- इस युद्ध के बाद गौरी पृथ्वीराज को कैद करके गजनी (अफगानिस्तान) ले जाता है।
- चन्दरबरदोर की ठिगार पृथ्वीराजरासो के अनुसार गजनी में पृथ्वीराज ने गौरी की शब्दभेदी बात से मारा ०४ स्वयं आत्महत्या कर ली थी।

note → चन्दरबरदोर द्वारा बीला गपा दीहा चार बांस 24 गज भंगुल अष्ट प्रमाण ता ऊपर सुल्तान मत पूछे चौहान

- गौरी द्वारा 1194 में पृथ्वीराज के पुत्र गीविन्दराज को रणम्भौर भेज दिया गया।
- भजमेर के चौहान वंश का आन्तेम ब्राह्मण था → पृथ्वीराज चौहान

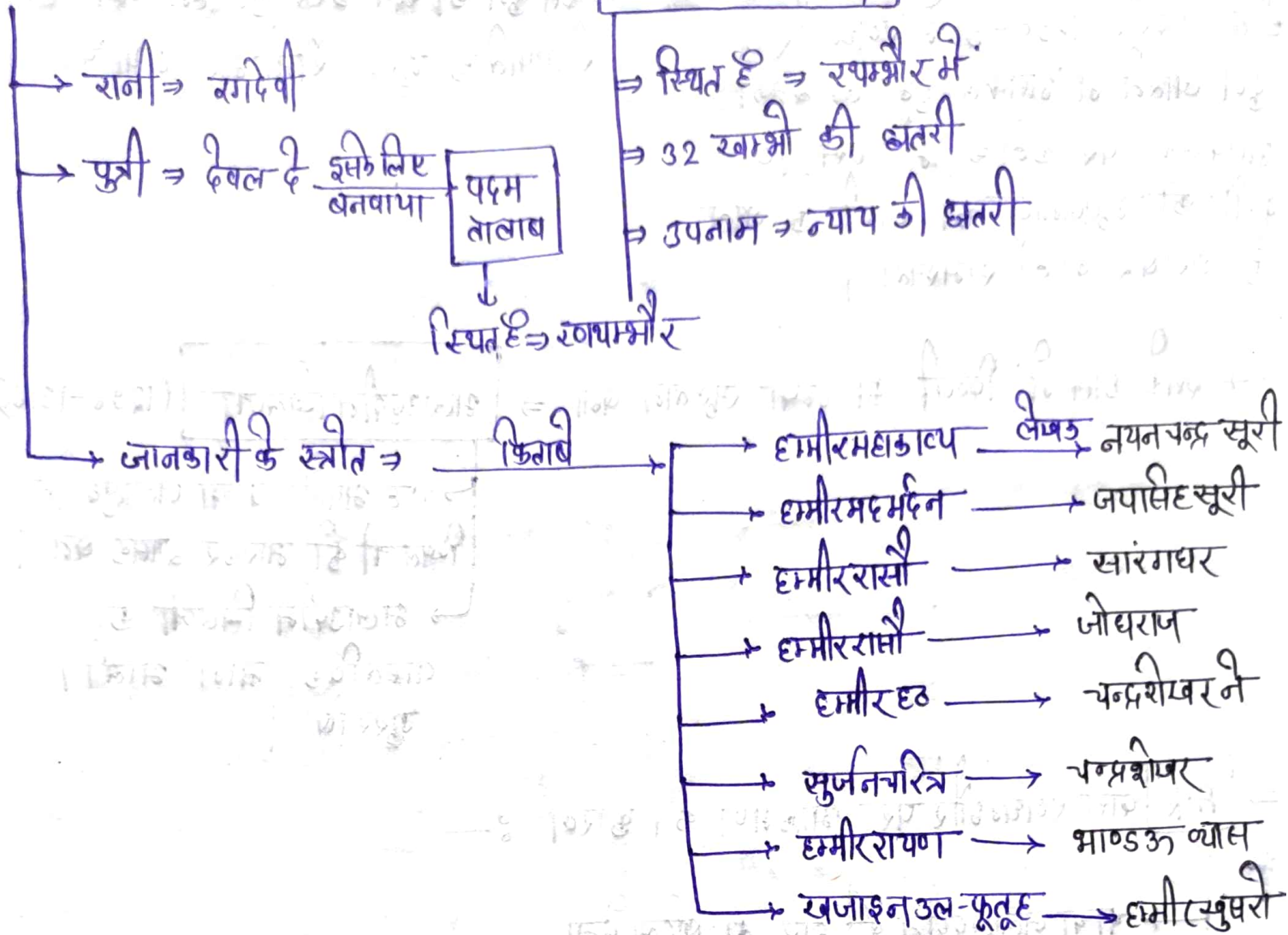
### रणम्भौर के चौहान

→ संस्थापक → गीविन्दराज चौहान ने 1194 में की थी।

→ सबसे प्रसिद्ध ब्राह्मण → **हम्मीरदेव चौहान** (1182-1301)

→ पिता → जैत्रसिंह → इससे लिए बनवाई जैत्रसिंह की छवरी

## जैत्रासिंह की धतूरी



note

हमीरदेवचौहान के लिए कथावत ⇒ सिंह सुवन सत्पुराण वचन कदली कलै ईक बार हमीर दठ तिरिया तेल चढ़े न बूझी बार।

note

⇒ इसने अपने जीवन में कुल 11 पुष्ट लगे उनमें से 16 में जीती और भान्तिभ में दारि और इसी में मृत्यु हो गई।

→ इन्होंने पक्ष करवाया ⇒ कीटिजन्य पक्ष —→ परीहित था ⇒ विश्वस्वरूप

→ इनका समकालीन सुल्तान ⇒ फिलीठा जलालुद्दीन खिलजी (1290-96)

→ इसने रणथम्भौर पर 1290-91 में आक्रमण किया

→ इसने जीता ⇒ **शार्इन दुर्ग** सवाईभाघोष्ट

→ उपनाम ⇒ रणथम्भौर दुर्ग की कुर्नी/चाबी



m.  
 ⇒ जलालुद्दीन 1290-91 में रणथम्भौर दुर्ग जीतने में असफल हुआ और इसकी असफलता पर कहा ⇒ मैं ऐसे 10 दुर्गों की मुसलमानों की दाढ़ी के बाल के बराबर नहीं समझता।

⇒ इस दुर्ग की रक्षा करते हुए हमीरदेव का सेनापति ⇒ गुरदास सैनी मारा गया था

⇒ इसके काल में दिल्ली का नया सुल्तान बना ⇒ **अलाउद्दीन खिलजी** (1296-1316)

⇒ यह अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की मारकर शासक बना।

⇒ अलाउद्दीन खिलजी का वास्तविक नाम भाली।  
 गुरसाव ।

⇒ **A.K** द्वारा रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण :-

→ चाचा जलालुद्दीन की हार का बदला देना

→ A.K की साम्राज्यवादी नीति।

→ हमीरदेव द्वारा कर न देने पर

→ A.K के विघ्नोहि मौहम्मदशाह की हमीरदेव द्वारा शरण देना।

→ हमीरदेव के सेनापति ⇒ धर्मसिंह, भीमासिंह, रणमल, रातेपाल,

युद्ध हुआ ⇒ 1299 में हिन्दुवाट / घाटी का युद्ध

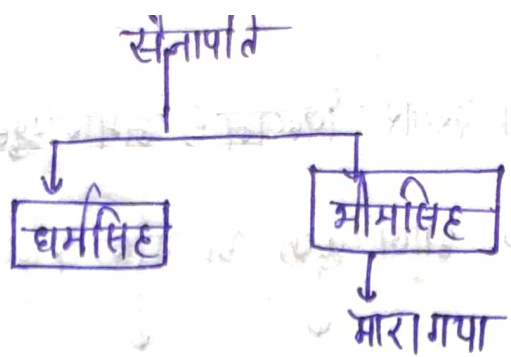
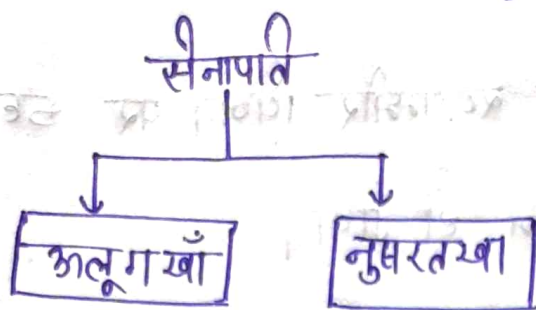
**A.K**

हार

सेनापति

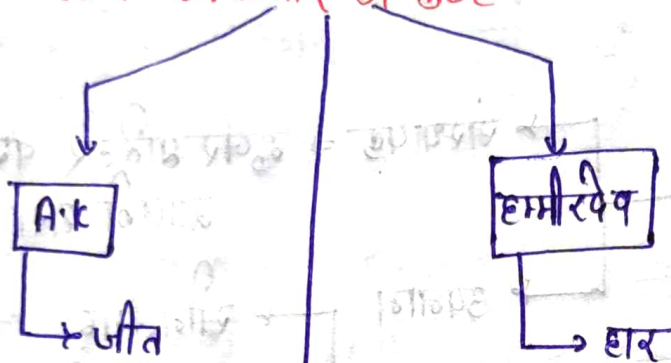
हमीरदेव

जीत



→ स्वयं A.K रणथम्भीर भग्निपान पर आया

1301 रणथम्भीर का फुटद



- \* A.K ने इस दुर्ग पर अधिकार किया ॥ 1301 में
- \* हमीरदेव के विश्वासघाती रणमल + रतिपाल
- \* केसरिया ठिया हमीरदेव चौहान के नेतृत्व में सभी राजपूत लड़ते हुए मारे गए।
- \* जीहर ठिया ⇒ रगदेवी + देवल दे ने पद्मनाभा में कूदकर जल जीहर ठिया।
- \* राजा का पहला सामा था।

note ⇒ भलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भीर का ठिला अपने सैनापति अलूग खाँ की सीपा था।

note ⇒ भलाउद्दीन खिलजी ने फुटद के बाद रणमल व रतिपाल और मोहम्मद शाह की हत्या कर ली।



→ A.R. का दरबारी विद्वान = अमीर खुसरो ने रणथम्भौर विजय पर कहा था।

<sup>note</sup> कहा = भाज. दुर्ग का गुह, इस्लाम का ही गया।

हिन्दु

स्थान

**जालौर के सीनगरा चौहान**

→ प्राचीन नाम = जाबालपुर

→ पहल दुर्ग = **जालौर दुर्ग**

→ संस्थापक = गुर्जर प्रतिहार वंश के ब्राह्मणों द्वारा

→ उपनाम

→ सीनलगढ़

→ सुवर्णगिरि

→ जलालाबाद

<sup>note</sup>

सीनलगढ़

स्वर्णगिरि

जलालाबाद

जलालपुर

दुर्ग

→ पहल दुर्ग सीनगिरि पहाड़ी पर स्थित है। जिसके कारण चौहानों को सीनगरा चौहान कहते हैं।

→ सीनगरा चौहानों की कुलदेवी = आशापुरा माता (मीरवा, जालौर)

**सीनगरा चौहान**

→ संस्थापक = **तिरिपाल चौहान** → स्थापना समय = 1182 ई.

→ उपनाम = **कीरू एक महान ब्राह्मण**

→ कहा गया = **मुहम्मद ग़ाज़ी**

→ उपनाम = राजपूताने का अशुल फजल

कहा गया  
→ मुहम्मद ग़ाज़ी

→ प्रासिद्ध शासक ⇒ **कान्हडदेव चौहान (1305-11)**

→ रानी ⇒ जैतलदे

→ पुत्र ⇒ वीरमदेव

→ भतीजा ⇒ शाहलदेव चौहान → राजा था सिवागाडा

→ रानी ⇒ मैनादे

बालोतरा

→ कान्हडदेव की जानकारी देने वाले ग्रंथ पुस्तक ⇒ कान्हडदेव संबंध  
⇒ वीरमदेव सीनगरा रि थात

लेखक ⇒ पद्मनाभ

→ समकालीन दिल्ली का सुल्तान था ⇒ **A.K (1296-1316)**

वास्तविक नाम ⇒ कुली / गुरसाफ

**कान्हडदेव (1305-11)**

→ सेनापति ⇒ जैता देवडा > इन्होंने 1299 में गुजरात भागिषान से लौट रही A.K की सेना को लूटा।

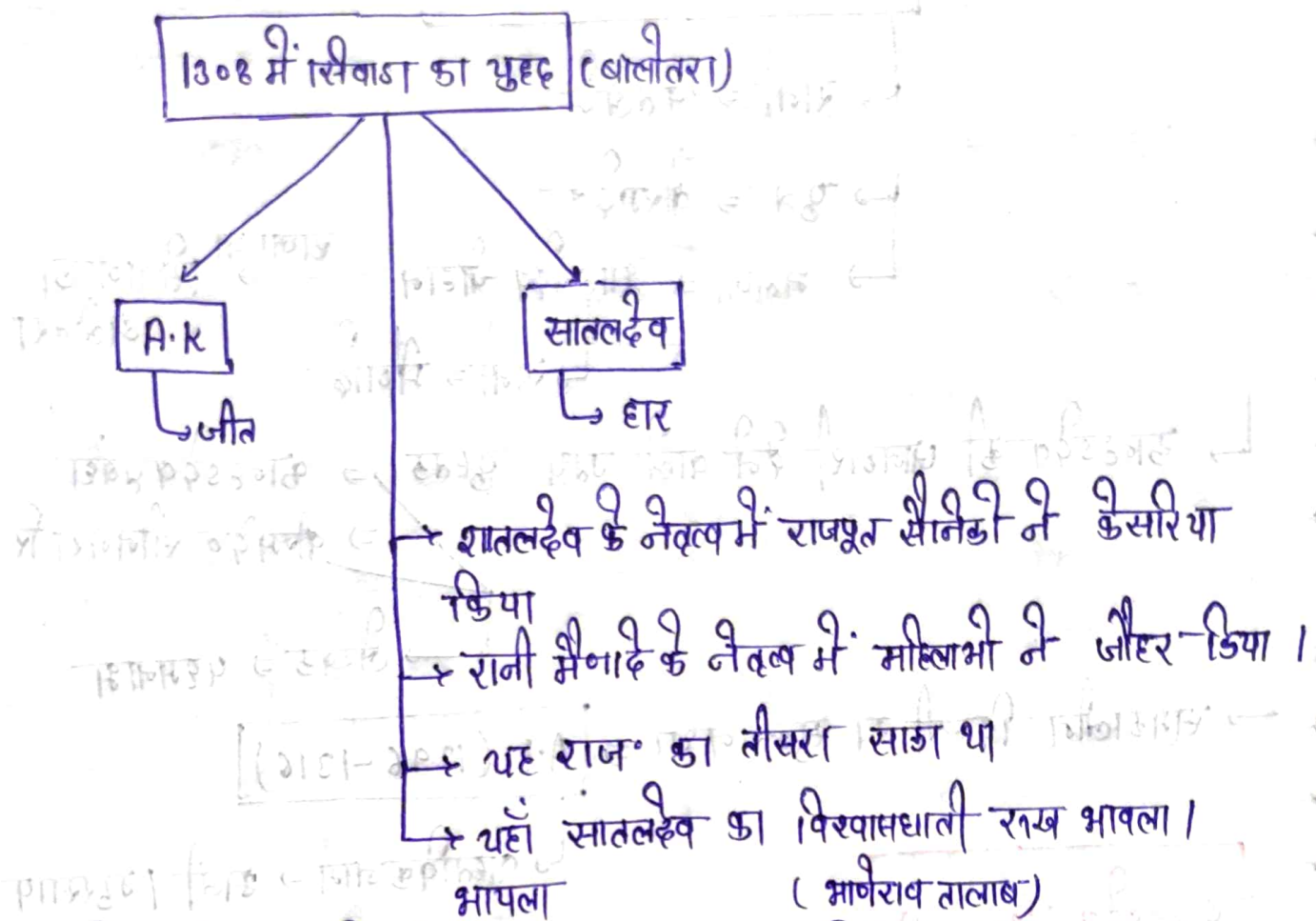
→ A.K ने जालौर भागिषान पर 1305 में सेनापति भेजा ⇒ एन-उल-मुल्क - मुल्तानी

→ इनके समक्ष कान्हडदेव ने आत्मसमर्पण कर दिया।

→ कान्हडदेव ने पुत्र ⇒ वीरमदेव की A.K की सेवा में भेजा



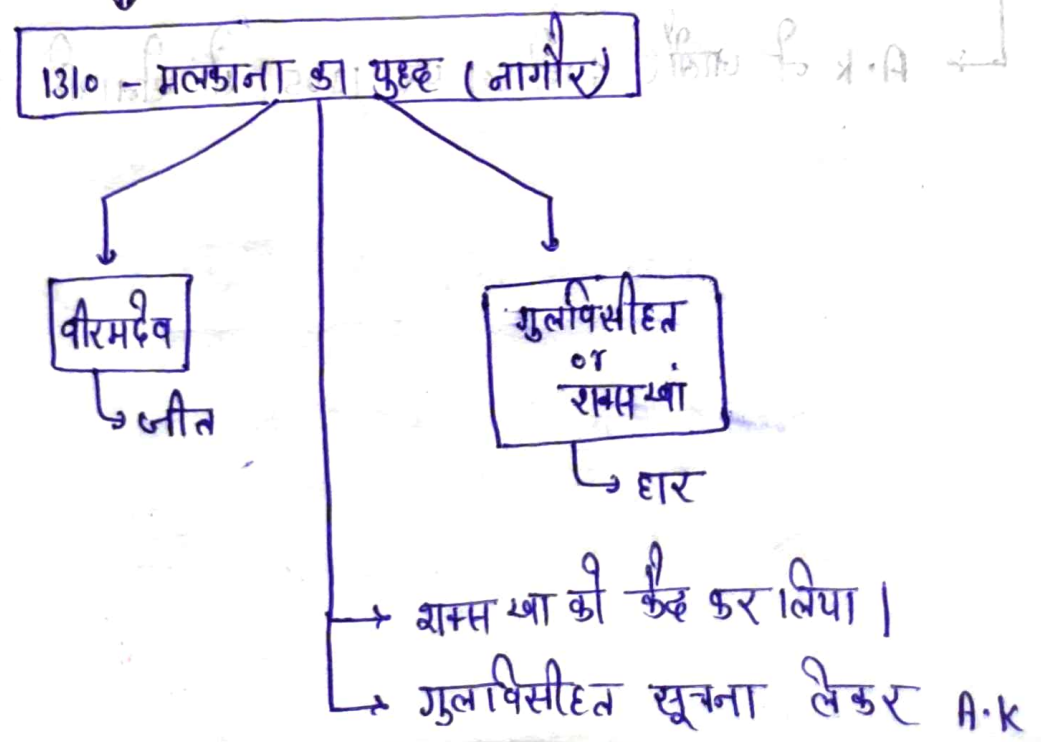
→ A.K द्वारा 1308 में जालौर आक्रमण पर भेजा सेनापति = कुमालुद्दीन गुर्ग



⇒ यह युद्ध A.K ने सेनापति की सौपा ⇒ कुमालुद्दीन गुर्ग की

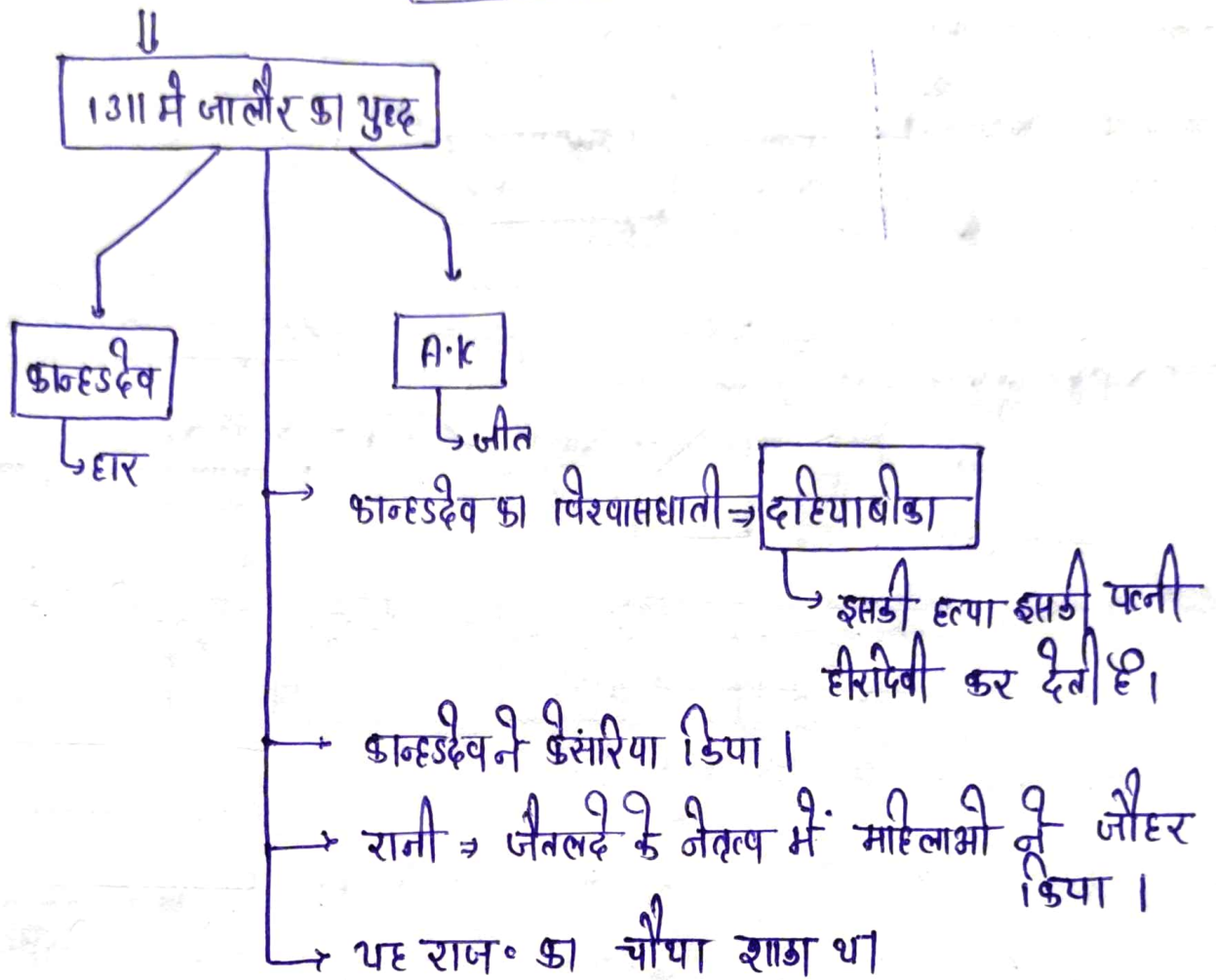
⇒ A.K ने सिवाणा का नया नाम रखा ⇒ खैराबाद

⇒ फिरोजा ने जालौर आक्रमण पर भेजा ⇒ धापमों गुलपिसीह्त की



= A.K स्वयं 1311 में गया था

= जालौर अभियान पर



note ⇒ ~~सिख~~ वीरमदेव ने आशापुरा माता के मंदिर के सामने आत्महत्या कर ली। जिसका सिर काटकर A.K फिरीजा की देता है।

note ⇒ फिरीजा की हूँ सिर के साथ यमुना नदी में कूड़र सगी हो जाती है।

note ⇒ A.K जालौर का नया नाम जलालाबाद रख देता है।

note ⇒ इस नरसंहार में कान्हडदेव का छोटा बेटा मालदेव A.K की माधेनता स्वीकार करता है। और जिन्दा बच जाता है।